BASED ON
NEP/NCF

संस्कृत निकुंज

Teacher's Manual

प्रथमा

Vrindavan Books International
New Delhi

पहला पाठ :
(यह - वह)

एषः पाठकः।	यह पाठक/छात्र हैं।
पाठकः पठति।	छात्र/पाठक पढ़ता है।
पाठकः किं करोति?	छात्र/पाठक क्या करता है?
सः पठति।	वह पढ़ता है।
एषः नवप्रभातः।	यह नवप्रभात है।
नवप्रभातः गायति।	नवप्रभात गाता है।
नवप्रभातः किं करोति?	नवप्रभात क्या करता है?
सः गायति।	वह गाता है।
एषः आचार्यः।	यह अध्यापक है।
किम् आचार्यः पठति?	क्या अध्यापक पढ़ता है?
नहि, आचार्यः न पठति।	नहीं, अध्यापक नहीं पढ़ता है।
सः पाठयति।	वह पढ़ाता है।
एषः वैद्यः।	यह चिकित्सक है।
किं वैद्यः शयनं करोति?	क्या चिकित्सक सोता है?
नहि, वैद्यः शयनं न करोति।	नहीं, चिकित्सक नहीं सोता है।
सः चिकित्सयति।	वह चिकित्सा करता है।
एषः रञ्जकः।	यह चित्रकार है।
रञ्जकः रञ्जति।	चित्रकार रंगता है।
रञ्जकः किं रञ्जति?	चित्रकार क्या रंगता है?
सः चित्रं रञ्जति।	चित्रकार चित्र रंगता है।
एषा नर्मदा।	यह नर्मदा है।
नर्मदा पाठिका अस्ति।	नर्मदा छात्रा है।
नर्मदा किं न करोति?	नर्मदा क्या नहीं करती है?
सा न लिखति।	वह नहीं लिखती है।
किं नर्मदा लिखति?	क्या नर्मदा लिखती है?

नर्मदा न लिखति।	नर्मदा नहीं लिखती है।
सा पठति।	वह पढ़ती है।
एषा अम्बा। अम्बा पचति।	यह माता है। माता पकाती है।
किम् अम्बा गायति?	क्या माँ गाती है।
अम्बा न गायति। सा पचति।	माता गाती नहीं है। वह पकाती है।
अम्बा किं पचति?	माता क्या पकाती है?
सा ओदनं पचति।	वह चावल पकाती है।
एषा आचार्या।	यह शिक्षिका है।
आचार्या पाठयति।	शिक्षिका पढ़ाती है।
आचार्या किं पाठयति?	शिक्षिका क्या पढ़ाती है?
सा संस्कृतं पाठयति।	वह संस्कृत पढ़ाती है।
एषा बालिका	यह लड़की है।
एषा बालिका खेलति।	यह लड़की खेलती है।
बालिका किं करोति?	लड़की क्या करती है?
सा खेलति।	वह खेलती है।

अभ्यास

1. (क) सः पठति। (ख) सा नमति।
   (ग) सः लिखति। (घ) सा चलति।
2. (क) एषः बालकः। (ख) सः छात्रः।
   (ग) आलोकः पठति। (घ) मेघा गच्छति।
   (ङ) स्नेहा पाठ्यति। (च) सः कृष्णः किं करोति?
3. (क) प्रभातः पाठयति। 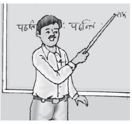 (ख) नगमा लिखति।
   (ग) रेखा गायति। 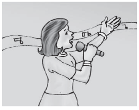 (घ) शिक्षिका पाठयति।

4. **पुंल्लिग स्तम्भः** **स्त्रीलिंग स्तम्भः**

गौरवः	मेघा
अजः	गरिमा
चिकित्सकः	परिचायिका
गोपालः	धरा
रमेशः	अजा
छात्रः	माला

5. (क) सा
किं
मेघा

(ख) सः
प्रणवः
किम्

(ग) एषा
किं
सा

(घ) एषः
किं
सः

6. (क) पाठकः पठति।
(ख) नवप्रभातः गायति।
(ग) आचार्यः पाठयति।
(घ) नर्मदा न लिखति।
(ङ) अम्बा न गायति।

दूसरा पाठ :
ये/ये सब अथवा वे/वेसब

एते कण्ठीलाः।	ये ऊँट हैं।
कण्ठीलाः गच्छन्ति।	ऊँट जाते हैं।
किं कण्ठीलाः धावन्ति?	क्या ऊँट दौड़ते हैं?
नहि, कण्ठीलाः न धावन्ति।	नहीं, ऊँट नहीं दौड़ते हैं।
ते गच्छन्ति।	वे जाते हैं।
ते कण्ठीलाः चलन्ति।	वे ऊँट चलते हैं।
एते खचराः।	ये पक्षी हैं।
खचराः उत्पतन्ति तिष्ठन्ति च।	पक्षी उड़ते और बैठते हैं।
अधुना खचराः किं कुर्वन्ति?	अब पक्षी क्या करते हैं?

अधुना ते उत्पतन्ति तिष्ठन्ति च।	अब वे उड़ते और बैठते हैं।
खचरा: प्रात: उत्पतन्ति।	पक्षी प्रात: उड़ते हैं।
ते प्रात: उत्पतन्ति।	वे प्रात: उड़ते हैं।
अधुना धावस्पर्धा।	अब दौड़ प्रतियोगिता है।
अश्वा: धावस्पर्धां कुर्वन्ति।	घोड़े दौड़ प्रतियोगिता करते हैं।
ते धावस्पर्धां कुर्वन्ति।	वे दौड़ प्रतियोगिता करते हैं।
ते अश्वा: धावन्ति।	वे घोड़े दौड़ते हैं।
एता: अजा:।	ये बकरियाँ हैं।
अजा: चरन्ति।	बकरियाँ चरती हैं।
अजा: किं कुर्वन्ति?	बकरियाँ क्या करती हैं?
ता: तृणा: चरन्ति।	वे घास चरती हैं।
शिप्रा, मृणाला, प्रज्ञा च कूर्दन्ति।	शिप्रा, मृणाला और प्रज्ञा कूदती हैं।
शिप्रा, प्रज्ञा, मृणाला च किं कुर्वन्ति।	शिप्रा, प्रज्ञा और मृणाला क्या करती हैं?
ता: कूर्दन्ति।	वे कूदती हैं।
एता: गायिका:।	ये गायिकाएँ हैं।
गायिका: किं कुर्वन्ति?	गायिकाएँ क्या करती हैं?
गायिका: गायन्ति।	गायिकाएँ गाती हैं।
किं गायिका: नृत्यन्ति?	क्या गायिकाएँ नृत्य करती हैं?
नहि, गायिका: न नृत्यन्ति।	नहीं, गायिकाएँ नृत्य नहीं करती हैं।
ता: गायन्ति।	वे गाती हैं।
एता: पिपीलिका:।	ये चीटिंयाँ हैं।
पिपीलिका: किं कुर्वन्ति?	चीटियाँ क्या करती हैं?
पिपीलिका: चलन्ति।	चीटियाँ चलती हैं।
किं पिपीलिका: धावन्ति?	क्या चीटियाँ दौड़ती हैं?
नहि, पिपीलिका: न धावन्ति।	नहीं, चीटियाँ दौड़ती नहीं हैं।
ता: चलन्ति।	वे चलती हैं।
एता: बालिका:।	ये लड़कियाँ हैं।
बालिका: किं कुर्वन्ति?	लड़कियाँ क्या करती हैं?
बालिका: नृत्यन्ति।	लड़कियाँ नाचती हैं।

किं बालिकाः नमन्ति?	क्या लड़कियाँ नमस्कार करती हैं?
नहि, बालिकाः न नमन्ति।	नहीं, लड़कियाँ नमस्कार नहीं करती हैं।
ताः नृत्यन्ति।	वे नाचती हैं।

अभ्यास

1. (क) ताः (ख) ते
   (ग) ताः (घ) ते
2. (क) एषा (ख) एषा
   (ग) एते (घ) एते
   (ङ) एषः (च) एषः
3. (अ) (क) बालकः क्रीडति।

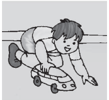

(ख) बालिकाः नृत्यन्ति।

(ग) प्रमिला आगच्छति।

(घ) राधा तरति।

(ङ) रामः पतति।

(ब) (क) कण्डीला गच्छन्ति
(ख) खचराः उत्पतन्ति
(ग) अजाः चरन्ति
(घ) गायिकाः गायन्ति
(ङ) पिपीलिकाः चलन्ति

4. (क) बालिकाः पतन्ति। (ख) मयूरः नृत्यति।
   (ग) खचरः उत्पति। (घ) सा नृत्यति।
   (ङ) ताः नृत्यन्ति।
5. (क) अन्ति पठन्ति (ख) अन्ति पतन्ति
   (ग) अन्ति गच्छन्ति (घ) अन्ति धावन्ति

(ङ)	अन्ति	लिखन्ति	(च)	अन्ति	नृत्यन्ति
(छ)	अन्ति	हसन्ति	(ज)	अन्ति	भवन्ति
(झ)	अन्ति	नमन्ति	(ञ)	अन्ति	क्रीडन्ति

तीसरा पाठ :
मैं और तुम

मयंकः लिखति।	मयंक लिखता है।
त्वं किं करोषि?	तुम क्या करते/करती हो?
अहम् अपि लिखामि।	मैं भी लिखता/लिखती हूँ।
मारिया नमति।	मारिया नमस्कार करती है।
किं त्वं नमसि?	क्या तुम नमस्कार करते/करती हो?
आम्, अहं नमामि।	हाँ, मैं नमस्कार करता/करती हूँ।
पाठकः प्रातः पठति।	छात्र प्रातः पढ़ता है।
किं त्वं प्रातः पठसि?	क्या तुम भी प्रातः पढ़ते/पढ़ती हो?
आम्, अहम् अपि प्रातः पठामि।	हाँ, मैं भी प्रातः पढ़ता/पढ़ती हूँ।
अम्बा ओदनं पचति।	माता चावल पकाती है।
अहम् ओदनं न पचामि।	मैं चावल नहीं पकाता/पकाती हूँ।
किं त्वम् ओदनं पचसि?	क्या तुम चावल पकाते/पकाती हो?
नहि, अहं भोजनं पचामि।	नहीं, मैं खाना पकाता/पकाती हूँ।
विभा दुग्धं पिबति।	विभा दूध पीती है।
किं त्वं दुग्धं पिबसि?	क्या तुम दूध पीते/पीती हो?
नहि, अहं मधुपेयं पिबामि।	नहीं, मैं शरबत पीता/पीती हूँ।
शेरशाहः हसति।	शेरशाह हँसता है।
किं त्वं हससि?	क्या तुम हँसते/हँसती हो?
आम्, अहं हसामि।	हाँ, मैं हँसता/हँसती हूँ।
त्वं कुत्र गच्छसि?	तुम कहाँ जा रहे/रही हो?
अहं विद्यालयं गच्छामि।	मैं विद्यालय जा रहा/रही हूँ।
तत्र त्वं किं करोषि?	वहाँ तुम क्या करते/करती हो?

तत्र अहं पठामि।	वहाँ मैं पढ़ता/पढ़ती हूँ।
तत्र अहं संस्कृतं पठामि।	वहाँ मैं संस्कृत पढ़ता/पढ़ती हूँ।
तत्र अहं क्रीडामि।	वहाँ मैं खेलता/खेलती हूँ।

अभ्यास

1. (क) अहं पचामि। (ख) अहं नमामि।
   (ग) लिखसि। अहं (घ) त्वं भ्रमामि।
   (ङ) त्वं खेलामि। (च) अहं गच्छामि।

2. (क) सः , लिखसि , आम् (ख) पठसि, किं, नहि

3.

सः	गच्छति
सा	पचति
ते (पुंल्लिंग)	खादन्ति
ते (स्त्रीलिंग)	नृत्यतः
तौ	खादतः
त्वम्	पिबसि
अहं	यच्छामि

4. (क) पठति (ख) पचति
   (ग) कुर्वन्ति (घ) गच्छतः
   (ङ) लिखतः (च) क्रीडामि
   (छ) नमन्ति (ज) पठसि

5. (क) पठसि अहं (ख) त्वम् खादामि
   (ग) पिबसि जलं (घ) त्वं , यच्छसि जलं
   (ङ) क्रीडसि अहं (च) नृत्यसि नहिं,

चौथा पाठ :
कालांशम्-वेला

अधुना संस्कृतवेला।	इस समय संस्कृत वेला है।
तत्र बालकाः संस्कृतं पठन्ति।	वहाँ लड़के संस्कृत पढ़ते हैं।
ते परस्परं संस्कृतं वदन्ति।	वे आपस में संस्कृत बोलते हैं।
पश्चात् बालिकाः क्रीडन्ति।	बाद में लड़कियाँ खेलती हैं।
बालिका—यूयं किं कुरुथ?	लड़की—तुम सब क्या कर रही हो?
बालिकाः—वयं सज्जाः भवामः।	लड़कियाँ—हम सब सजावट (तैयारी कर रहे हैं)।
बालिका—यूयं किं क्रीडथ?	लड़की—तुम सब क्या खेलती हो?
बालिकाः—अद्य वयं फलककंदुकं क्रीडामः।	लड़किया—आज हम सब टेबिल-टेनिस खेलते हैं।
(क्रीडाचार्यः आगच्छति)	(खेल के अध्यापक आते हैं।)
क्रीडाचार्यः—(छात्रान् प्रति) किं यूयम् अपि सज्जाः भवथ?	क्रीडाध्यापक—(छात्रों से) क्या तुम भी तैयार होते हो?
बालकाः—आम्, श्रीमान! वयम् अपि सज्जाः भवामः। अद्य वयं फलककंदुकं क्रीडामः।	लड़के—हाँ श्रीमान् हम भी तैयार हो रहे हैं। आज हम सब टेबिल-टेनिस खेल रहे हैं।
क्रीडाचार्यः—शोभनम्।	क्रीडाध्यापक—सही है।
अधुना भोजनवेला। तत्र बालकाः भोजनं खादन्ति।	(अब खाने की वेला है। वहाँ लड़के खाना खाते हैं)
शिक्षिका—किं यूयं प्रतिदिनं पोलिकां खादथ?	अध्यापिका—क्या तुम सब रोज रोटी खाते हो?
बालकाः—आम्, वयं प्रतिदिनं पोलिकां खादामः।	लड़के—हाँ हम सब रोज रोटी खाते हैं।
शिक्षिका—किं यूयं प्रतिदिनं भातं खादथ?	अध्यापिका—क्या तुम सब प्रतिदिन चावल खाते हो?

छात्राः—नहि, वयं प्रतिदिनं भातं न खादामः। छात्र—नहीं, हम सब प्रतिदिन चावल नहीं खाते हैं।

शिक्षिका—किं यूयं गायथ? अध्यापिका—क्या तुम सब गाते हो?

छात्राः—नहि, वयं न गायामः, वयं नृत्यामः। छात्र—नहीं, हम नहीं गाते हैं, हम नाचते हैं।

शिक्षिका—किं यूयं तरथ? अध्यापक—क्या तुम सब तैरते हो?

छात्राः—आम्, वयं तरामः। वयं जलाशये तरामः। छात्र—हाँ, हम सब तैरते हैं। हम तालाब में तैरते हैं।

शिक्षिका—यूयं कुत्र तरथ? अध्यापिका—तुम सब कहाँ तैरते हो?

छात्राः—अत्र तरणतालः अस्ति। वयं तत्र तरामः। छात्र—यह स्वीमिंग पुल है। हम वहाँ तैरते हैं।

अभ्यास

2. (क) क्रीडथ
 वयं
 (ख) यूयं
 वयं
 (ग) हसथ
 वयं
 (घ) यूयं
 गायामः। वयं
3. (क) यदा ; तदा
 (ख) यदा ; तदा
 (ग) यदा ; तदा
 (घ) यदा ; तदा
4. (क) वयं खादाम्
 (ख) यूयं किं लिखथ?
 (ग) ताः कुत्र गच्छन्ति?
 (घ) ते लिखन्ति।

पाँचवाँ पाठ :

(दो) करते/करती हैं

इमौ पाठकौ। ये दोनों छात्र हैं।

इमौ पाठकौ किं कुरुतः? ये दोनों छात्र क्या करते हैं?

इमौ पाठकौ सुलेखं कुरुतः। ये दोनों छात्र सुलेख करते हैं।

श्रेष्ठः पाठकः सुलेखं प्रकरोति। श्रेष्ठ छात्र सुलेख विशेष रूप से करते हैं।

कमलः सुलेखं प्रकरोति। कमल सुलेख विशेष रूप से करता है।

इमौ अन्वेषकौ।	ये दोनों खोज करने वाले (खोजी) हैं।
इमौ अन्वेषकौ किं कुरुतः?	ये दोनों खोजी क्या करते हैं?
इमौ अन्वेषकौ आविष्कुरुतः।	ये दोनों खोजी आविष्कार करते हैं।
तौ आविष्कुरुतः।	वे दोनों आविष्कार करते हैं।
आवाम् आविष्कुर्वः।	हम दोनों आविष्कार करते हैं।
इमौ मूषकौ।	ये दोनों चूहे हैं।
इमौ मूषकौ किं कुरुतः?	ये दोनों चूहे क्या करते हैं।
इमौ मूषकौ उत्कुरुतः।	ये दोनों चूहे खोदते हैं।
इमे बालिके।	ये दोनों लड़कियाँ हैं
इमे बालिके किं कुरुतः?	ये दोनों लड़कियाँ क्या करती हैं?
इमे बालिके मार्जनीभ्यां परिष्कुरुतः।	ये दोनों लड़कियाँ झाडुओं से साफ (सफाई) करती हैं।
इमे वृद्धे बहुभोजी स्तः।	ये दोनों बुढ़ियाँ अधिक खाने वाली हैं
बहुभोजनेन ते लम्बोदरे।	अधिक खाने से वे लम्बोदर (मोटे पेट वाली) हैं।
बहुभोजनः उदरे विकरोति।	अधिक खाना पेट में विकार करता है।
इमे कृष्णा–लता च।	ये दोनों कृष्णा और लता हैं।
कृष्णा–लते च स्वच्छं कुरुतः।	कृष्णा और लता सफाई करती हैं।
ते कक्षात् रजकणान् निराकुरुतः।	वे दोनों कमरे से धूल दूर करती हैं।
तौ सख्या	वे दोनों सखियाँ हैं।
अयं वृद्धः नेत्रहीनः अस्ति।	यह बूढ़ा नेत्रहीन है।
सख्यौ नेत्रहीनं प्रति उपकुरुतः।	(दो) सखियाँ नेत्रहीन के प्रति उपकार करती हैं।
इमौ सर्पौ।	ये दोनों साँप हैं।
इमौ सर्पौ किं कुरुतः?	ये दोनों साँप क्या करते हैं?
इमौ सर्पौ फुत्कुरुतः।	ये दोनों साँप फुँकारते हैं।

अभ्यास

2. (क) भवसि। (ख) भवावः।
(ग) भवन्ति (घ) भवामि।
(ङ) भवथ। (च) भवतः
(छ) भवति। (ज) भवथः।

3. (क) तौ
तौ
तौ
(ख) ते
ते
ते
(ग) किं ; त्वं
त्वं
अहं
अहं
(घ) किं ; युवां
युवां
आवाम्
आवां

4. (क) अहं मयूरः अस्मि। (ख) आवां बालिके स्वः
(ग) सः वानरः कूर्दति। (घ) ते वानराः कूर्दन्ति।
(ङ) ते वदन्ति। (च) यूयं कदा खेलथ।

5.

	एकवचन	**बहुवचन**
(क)	सा लिखति।	ताः लिखन्ति।
(ख)	सः पठति।	ते पठन्ति।
(ग)	कृष्णः वदति।	कृष्णाः वदन्ति।
(घ)	त्वं गच्छसि।	यूयं गच्छथ।
(ङ)	अहं आगच्छामि।	वयं आगच्छामः।
(च)	त्वं वदसि।	यूयं वदथ।

छठा पाठ :
लड़के और लड़कियाँ

संकेत : विवेकः शेखरः ---------------------प्रशान्तेपि।

अर्थ—विवेक, शेखर, उर्मित और प्रशान्त चार भाई हैं। विवेक के दो मित्र, निकित और रमेश हैं। वे दोनों विवेक के साथ पढ़ते हैं। शेखर की मित्र संख्या पाँच है।

उर्मित के मित्र तीन है, प्रशान्त के भी।

संकेत : निकिता विवेकादि ------------------------च गच्छति।

अर्थ—निकिता विवेकादि भाइयों में एक बहिन है। वह तीसरी कक्षा में पढ़ती है। निकिता की सात सखियाँ हैं। उनके साथ वह खेलती है, पढ़ती है और विद्यालय जाती है।

संकेत : सर्वे बालकाः -----------------------दिनचर्या अस्ति।

अर्थ—सभी लड़के समान भाव से खेलते हैं। वे आठ गायों का दूध पीते हैं वे नौ बजे खाटों पर बैठते और सोते हैं। प्रातः छह बजे वे उठते हैं। यह बालकों की दिनचर्या है।

अभ्यास

2. (क) द्वे मित्रे। (ख) निकिता
(ग) सप्त सखाः (घ) सर्वे बालकाः
(ङ) सर्वे बालकाः

3. (क) विवेकः, शेखरः, उर्मितः, प्रशान्तः च चात्वारः भ्रातरः सन्ति।
(ख) उर्मितस्य मित्राः त्रय सन्ति।
(ग) विवेकः, शेखरः, उर्मितः, प्रशान्तः।
(घ) बालकाः नववादने शैयासु तिष्ठन्ति स्वपन्ति च।
(ङ) सर्वे बालकाः अष्टानां धेनूनां दुग्धं पिबन्ति।

4. (क) इदानीं नववादन समयः अस्ति।
(ख) मम चत्वाराः भ्रातरः सन्ति।
(ग) रामस्य त्रय भ्रातरः सन्ति।
(घ) हस्ते पञ्च-अंगुल्यः न सन्ति।
(ङ) घटिकायां त्रीणि सूचिकादण्डाः सन्ति।

5. (क) उर्मित के मित्र तीन हैं, प्रशान्त के भी।
(ख) वह तीसरी कक्षा में पढ़ती है।
(ग) वह उसके साथ खेलती है।
(घ) वे सब आठ गायों का दूध पीते हैं।
(ङ) यह लड़कों की दिनचर्या है।

6. (क) मम चत्वार: भ्रातरा: सन्ति।
   (ख) अहं पञ्चमी कक्षायां पठामि।
   (ग) इमा: पुस्तिका: तृतीया: सन्ति।
   (घ) अयं तृतीय: भ्रातृ अस्ति।
   (ङ) अयं चतुर्थ: पाठ: अस्ति।

सातवाँ पाठ :
यह कौन/क्या है?

अयं क:?	यह कौन है?
अयं बालक:।	यह बालक है।
अयं बालक: किं करोति?	यह बालक क्या करता है?
अयं बालक: नमति।	यह बालक नमस्कार करता है।
अयं क:?	यह कौन है?
अयं चित्रकार:।	यह चित्रकार है।
अयं चित्रकार: किं करोति?	यह चित्रकार क्या करता है?
अयं चित्रकार: चित्रसज्जां करोति।	यह चित्रकार चित्र सजाता है।
इमौ कौ?	ये दोनों कौन हैं?
इमौ बालकौ।	ये दोनों बालक हैं।
इमौ बालकौ किं कुरुत:?	ये दोनों बालक क्या करते हैं?
इमौ बालकौ पठत:।	ये दोनों बालक पढ़ते हैं।
इमौ कौ?	ये दोनों कौन हैं?
इमौ शशकौ।	ये दोनों खरगोश हैं।
इमौ शशकौ किं कुरुत:?	ये दोनों खरगोश क्या करते हैं?
इमौ शशकौ खादत:।	ये दोनों खरगोश खाते हैं।
इमौ कौ?	ये दोनों कौन हैं?
इमौ वृषभौ।	ये दोनों बैल हैं।
इमौ वृषभौ किं कुरुत?	ये दोनों बैल क्या करते हैं?
इमौ वृषभौ शकटं: कर्षत:।	ये दोनों बैल गाड़ी खींचते हैं।

इमे के धावन्ति?	ये कौन दौड़ते हैं?
इमे घोटकाः धावन्ति।	ये घोड़े दौड़ते हैं।
घोटकाः तीव्रं धावन्ति।	घोड़े तेज दौड़ते हैं।
इमे के कूर्दन्ति?	ये कौन कूदते हैं?
इमे मर्कटा कूर्दन्ति।	ये बंदर कूदते हैं।
ते मर्कटाः कूर्दन्ति।	वे बंदर कूदते हैं।
इयं बिडाला किं करोति?	यह बिल्ली क्या करती है?
इयं बिडाला दुग्धं पिबति।	यह बिल्ली दूध पीती है।
दुग्धं मधुरम् अस्ति।	दूध मीठा है।
इयं का?	यह कौन है?
इयं दुर्गा।	यह दुर्गा है।
इयं दुर्गा किं करोति?	यह दुर्गा क्या करती है?
इयं दुर्गा संहरति।	यह दुर्गा संहार करती है।
इमे के?	यह दोनों कौन हैं?
इमे कन्ये।	यह दोनों कन्याएँ हैं।
इमे कन्ये किं कुरुतः?	ये (दो) कन्याएँ क्या करती हैं?
इमे कन्ये पश्यतः।	ये (दो) कन्याएँ देखती हैं।
इमे के?	ये दोनों कौन हैं?
इमे चटके।	ये दोनों चिड़ियाँ हैं।
इमे चटके किं कुरुथ?	ये दोनों चिड़ियाँ क्या करती हैं?
इमे चटके रुवतः	ये दोनों चिड़ियाँ चहचहाती हैं।
इमाः काः?	ये क्या हैं?
इमाः नौकाः।	ये नौकाएँ हैं।
इमाः नौकाः तरन्ति।	ये नौकाएँ तैरती हैं।
इमाः मूषिकाः।	ये चुहियाँ हैं।
इमाः मूषिकाः किं कुर्वन्ति?	ये चुहियाँ क्या करती हैं?
इमाः मूषिकाः धावन्ति।	ये चुहियाँ दौड़ती हैं।
इमा मक्षिकाः।	ये मक्खियाँ हैं।

इमाः मक्षिकाः किं कुर्वन्ति?	ये मक्खियाँ क्या करती हैं?
इमाः मक्षिकाः उत्पतन्ति।	ये मक्खियाँ उड़ती हैं।

अभ्यास

2. (क) पठतः (ख) चित्रकारः
   (ग) शशकौ (घ) संहरति
   (ङ) रुवतः (च) मूषिकाः

3. (क) काः (ख) कौ
   (ग) कः (घ) के
   (ङ) का

4. **(अ) द्विवचन** — **बहुवचन**

	द्विवचन	बहुवचन
(क)	बालकौ नमतः।	बालकाः नमन्ति।
(ख)	वनचरौ धावतः।	वनचराः धावन्ति।
(ग)	वानरौ कूर्दतः।	वानराः कूर्दन्ति।
(घ)	पिकौ कूजतः।	पिकाः कूजन्ति।
(ङ)	शुकौ वदतः।	शुकाः वदन्ति।

(ब) द्विवचन वाक्य — **बहुवचन वाक्य**

	द्विवचन वाक्य	बहुवचन वाक्य
(क)	कृष्णे हसतः।	कृष्णाः हसन्ति।
(ख)	बालिके रुदतः।	बालिकाः रुदन्ति।
(ग)	महिले हसतः।	महिलाः हसन्ति।
(घ)	गायिके गायतः।	गायिकाः गायन्ति।
(ङ)	प्राचार्ये पाठयतः।	प्राचार्याः पाठयन्ति।

5. (क) यदि ; तर्हि
   (ख) यदि ; तर्हि
   (ग) यदि ; तर्हि
   (घ) यदि ; तर्हि
   (ङ) यदि ; तर्हि

आठवाँ पाठ :
यह क्या है?

एतत् फलम्।	यह फल है।
आताफलम् मधुरम् अस्ति।	सेब मीठा है।
एते फले।	ये (दो) फल हैं।
पक्वे आताफले मधुरे स्तः।	(दो) पके सेब मीठे हैं।
एतानि फलानि।	ये फल हैं।
आताफलानि मधुराणि सन्ति।	सेब मीठे हैं।
एतत् पुष्पम्।	यह फूल है।
एतत् पीतं पुष्पं विकसति।	यह पीला फूल खिलता है।
एते पुष्पे।	यह (दो) फूल हैं।
रक्ते पुष्पे विकसतः।	(दो) लाल फूल खिलते हैं।
एतानि पुष्पाणि।	ये फूल हैं।
चित्र–विचित्राणि पुष्पाणि विकसन्ति।	रंग–बिरंगे फूल खिलते हैं।
एतत् पत्रम्।	यह पत्ता है।
पत्रं हरितम् अस्ति।	पत्ता हरा है।
एते पत्रे।	यह (दो) पत्ते हैं।
एते हरिते पत्रे स्तः।	ये (दो) हरे पत्ते हैं।
एतानि पत्राणि।	ये पत्ते हैं।
शुष्कानि पत्राणि सन्ति।	सूखे पत्ते हैं।
एतत् स्यूतम्।	यह बैग है।
एतत् वृहदाकारं स्यूतम् अस्ति।	यह बड़े आकार का बैग है।
एते स्यूते।	ये दो बैग हैं।
एते स्यूते कृष्णनील वर्णे स्तः।	ये (दो) काले–नीले रंग के बैग हैं।
एतानि स्यूतानि।	ये बैग हैं।
एतानि स्यूतानि बहु–आकाराणि सन्ति।	ये बैग अनेक आकार के हैं।
तानि चित्र–विचित्राणि सन्ति।	ये रंग–बिरंगे बैग हैं।

इस चित्र को देखो–

इस चित्र में एक खिलौना, दो डिब्बे, तीन खिड़कियाँ, चार किताबें, पाँच तलवारें, छह त्रिशूल, सात बैग हैं। और इसके अतिरिक्त सात गेंदें (और) आठ मिठाइयाँ शोभा देती हैं। और नौ फल हैं।

अभ्यास

2. **(अ)**

	एकवचन वाक्य	**द्विवचन वाक्य**	**बहुवचन वाक्य**
(क)	फलम्	एते	एतानि
(ख)	एतत्	मन्दिरे	एतानि मन्दिराणि
(ग)	एतत्	दीपकम्।	एतानि
(घ)	एतत्	एते भोजने।	एतानि

3. (क) यत्र ; तत्र (ख) यत्र ; तत्र
   (ग) यत्र ; तत्र (घ) यत्र ; तत्र

4. (क) के (ख) किम्
   (ग) एतानि कानि? (घ) के

नौवाँ पाठ :
मेरी पाठशाला

संकेत : इयं मम ------------------------------------**भवति।**

अर्थ–यह मेरी पाठशाला है। मैं यहाँ पढ़ता/पढ़ती हूँ। पाठशाला ज्ञान की स्थली होती है।

संकेत : अयं प्राचार्यकक्षः ----------------------------**इच्छति।**

अर्थ–यह प्रधानाचार्य कक्ष है। प्रधानाचार्य विद्यालय का संचालन करते हैं। प्रधानाचार्य अनुशासन की इच्छा करते हैं।

संकेत : प्राचार्यकक्षं -------------------------------------**कुर्वन्ति।**

अर्थ–प्रधानाचार्य कक्ष के पास अध्यापक कक्ष है। खाली वेला में अध्यापक यहाँ चिंतन और अध्ययन करते हैं।

संकेत : विविधैः पुस्तकै ---------------------------**न भवति।**

अर्थ–विभिन्न पुस्तकों से सुसज्जित यह पुस्तकालय है। यहाँ छात्र अध्ययन करते हैं। ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है।

संकेत : पुस्तकालयात् पुस्तकम् ----------------अधितिष्ठन्ति।

अर्थ—पुस्तकालय से पुस्तक लकर छात्र यहाँ बैठते और पढ़ते हैं। वे पत्र–पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। छात्र आसन पर बैठते हैं।

संकेत : शारदा ----------------------------------कुर्वन्ति।

अर्थ—सरस्वती ज्ञान देती है। हम सरस्वती को नमस्कार करते हैं। यहाँ छात्र सरस्वती का ध्यान करते हैं। वे प्रार्थना करते हैं।

संकेत : अत्र ----------------------------------वृक्षाः सन्ति।

अर्थ—यहाँ विद्यालय का बगीचा है। छात्र खाली समय में यहाँ बैठते हैं। बगीचे के चारों ओर पेड़ हैं।

संकेत : इयं मम -----------------------------संस्कृतं पाठयति।

अर्थ—यह मेरी कक्षा है। मैं संस्कृत पढ़ता/पढ़ती हूँ। अध्यापक छात्रों को पढ़ाता है।

यह मेरे कक्षाध्यापक हैं। ये श्री उमाशंकर सुशील अध्यापक हैं। वह हमें संस्कृत पढाते हैं।

संकेत : अहं पाठशालां ---------------------------गच्छन्ति।

अर्थ—मैं पाठशाला से स्नेह करता/करती हूँ। विद्यालय के चारों ओर अनेक सड़कें हैं। छात्र सड़क से पाठशाला जाते हैं।

अभ्यास

2. (क) त्वं गृहाणि पश्यसि। (ख) भिक्षुकः वनानि उपवसति।
   (ग) त्वं विद्यालयाणि गच्छसि। (घ) वयं पुस्तकानि पठामः।
   (ङ) प्रधानाचार्यः आसानानि अधितिष्ठति।
   (च) सः पुष्पाणि आनयति।
3. (क) ज्ञानस्थली (ख) विद्यालय संचालनं
   (ग) चिन्तनम् अध्ययनं च (घ) इयं पुस्तककक्षा
   (ङ) श्री उमाशंकरः
4. (क) कानि (ख) कं
   (ग) कानि (घ) कं
   (ङ) कान्

दसवाँ पाठ :

अमृत विचार

संकेत : सत्येन धार्यंते ------------------------प्रतिष्ठितम् ॥१॥

अर्थ–सत्य से पृथ्वी टिकी है। सत्य से सूर्य तपता है। और सत्य से हवा बहती है। सभी सत्य (परमात्मा) पर स्थित है।

संकेत : एकेनापि सुपुत्रेण -------------------- रास भी ॥२॥

अर्थ–एक मात्र सुपुत्र होने पर शेरनी निर्भय होकर सोती है। दस पुत्रों के साथ होते हुए गधी अपने पुत्रों के साथ भार ही ढोती है।

संकेत : अविनयेन कुतो ------------------------विनम्रताम्॥३॥

अर्थ–बिना विनम्रता के विद्या कहाँ? विद्या के बिना सुख कहाँ? बिना सुख के शान्ति कहाँ? प्रयत्न से विनम्रता प्राप्त करनी चाहिए।

संकेत : उद्यमेन हि -----------------------मुखे मृगाः॥४॥

अर्थ–परिश्रम से कार्य सफल होते हैं। मनोरथ करने से नहीं। सोते हुए शेर के मुँह में हिरन स्वयं प्रवेश नहीं करते।

संकेत : मित्रेण कलहं ---------------------- परिवर्जयेत्॥५॥

अर्थ–'मित्र के साथ झगड़ा करके कभी कोई सुखी नहीं रहता' यह जानकर उस को (झगड़े को) निपटारा करना/ खत्म करना चाहिए।

अभ्यास

2. (क) सत्येन (ख) सिंही
   (ग) भारम् (घ) उद्यमेन
   (ङ) विनम्रताम् (च) मित्रेण कलहं

3. (क) सुखं विद्यया आयति।
   (ख) सत्येन पृथ्वी धार्यते, रविः तपते, वायु वाति च।
   (ग) बिना परिश्रमेण कार्यं न सम्भवति।
   (घ) पराक्रमी अपराक्रमी सुतः अथवा पुत्रसंख्याया विषमाता हि सिंही रासभी मध्ये विषमता।
   (ङ) मित्रेण कृत्वा कलहं जनः कदापि सुखी न भवति इति ज्ञात्वा तदैव प्रयासं कर्त्तव्यम्।

4. (क) दण्डेन (ख) हस्तेन
(ग) हस्ताभ्याम् (घ) नेत्राभ्याम्
(ङ) नेत्रेण

5. पश्यसि नेत्रेण द्विचक्रयानेन

ग्यारहवाँ पाठ :

प्रदान करना/देना

कृष्णाय नवनीतं रोचते।	कृष्ण को मक्खन अच्छा लगता है।
कृष्णाय वेणुवादनं रोचते।	कृष्ण को बाँसुरी बजाना अच्छा लगता है।
गोपालेभ्य: धेनुचारणं रोचते।	ग्वालों को गाय चराना अच्छा लगता है।
कृष्णाय नम:। गोपालाय नम:।	कृष्ण को नमस्कार है। गोपाल को नमस्कार है।
नृप: विप्राय धेनुं ददाति।	राजा ब्राह्मण को गाय देता है।
विप्र: नृपाय आशीर्वचनं ददाति।	ब्राह्मण राजा को आशीर्वचन देता है।
स: विप्राय दानं प्रयच्छति।	वह ब्राह्मण को दान देता है।
विप्र: तस्मै ज्ञानं प्रयच्छति।	ब्राह्मण उसके लिए ज्ञान प्रदान करता है।
राम: मूर्खाय क्रुध्यति।	राम मूर्ख पर क्रोध करता है।
गौतम: शारदायै कुप्यति।	गौतम शारदा पर कोप करता है।
ते गौतमाय कुप्यत:।	वे दोनों गौतम पर क्रोध करती हैं।
ते गोकर्णाय क्रुध्यन्ति।	वे गोकर्ण पर क्रोध करते हैं।
विद्या ज्ञानाय भवति। धनं मदाय, जीवन:	विद्या ज्ञान के लिए होती है। धन मद के लिए,
रक्षणाय, दानाय च भवति। शक्ति परेषां	जीवन रक्षा के लिए और दान के लिए होता है।
रक्षणाय भवति। सा संत्रासणाय न भवति।	शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है। वह दु:ख देने के लिए नहीं होती है।
रावण: रामाय क्रुध्यति।	राम पर रावण क्रोध करता है।
रावण: रामाय द्रुह्यति।	रावण राम पर द्रोह करता है।
स: रामाय ईर्ष्यति।	वह राम से ईर्ष्या करता है।

रावणः तस्मै असूयति।	रावण उसके लिए।
श्री गणेशाय नमः।	श्री गणेश को नमस्कार है।
यजमानाय स्वस्ति।	यजमान को स्वस्ति हो।
अग्नेय स्वाहा।	अग्नि को समर्पण है।
पितृभ्यः स्वधा।	पितरों को अर्पित है।
हरिः भक्ताय मोक्षं धारयति।	हरि भक्त के लिए मोक्ष पोषण करता है।
सुरेशः कृष्णाय शतं धारयति।	सुरेश कृष्ण के लिए सौ पोषण करता है।
सः मह्यं शतं धारयति।	वह मुझे सौ पोषण करता है।
सा तुभ्यं सहस्रं धारयति।	वह तुमसे हजार को पोषण करता है।
चक्रधराय नमः।	चक्रधर को नमस्कार है।
रमायै नमः।	रमा को नमस्कार है।
रामाय नमः।	राम को नमस्कार है।
पितृभ्यां नमः।	(दो) पितरों को नमस्कार है।

अभ्यास

2. (क) नमः (ख) रोचते
   (ग) ददाति (घ) कुप्यति
   (ङ) रोचते।

3.

(क)	पुत्राय		पुत्रेभ्यः
		छात्राभ्याम्	छात्रेभ्यः
	निर्धनाय		
(ख)			दुग्धेभ्यः
		फलाभ्याम्	फलेभ्यः
	मित्राय		मित्रेभ्यः
(ग)		अम्बाभ्याम्	अम्बाभ्यः
		शिक्षिकाभ्याम्	
	तारिकायै		तारिकाभ्यः
	सुतायै		सुताभ्यः

बारहवाँ पाठ :
हाथी और कछुआ

संकेत–वनात् ---------------------------इच्छामि।

अर्थ–(एक हाथी जंगल से निकलता है। वह एक तालाब की ओर जाता है वहाँ एक कछुआ रहता है। वह पानी से हाथी के पास आता है। दोनों मिलते हैं।)

कछुआ – तुम कौन हो और कहाँ से आ रहे हो?

हाथी – मैं जंगल से आ रहा हूँ। तालाब से पानी पीकर में जाना चाहता हूँ।

संकेत–किंतु अत्र ----------------------- पतन्ति च।

अर्थ– कछुआ–किंतु मैं यहाँ तैरता हूँ। यह छोटा तालाब है। मैं तालाब से जल नहीं देता हूँ।

हाथी–मित्र! तालाब के पानी पीने से पानी कम नहीं होता है।

कछुआ–कैसे?

हाथी–ईश्वर की कृपा से, हिमालय से जब पानी आता है, तब नदी उत्पन्न होती है। नदी एक स्थान से दूसरे स्थान को बहती है। अनेक नदियाँ पृथ्वी से समुद्र की ओर जाती हैं और वे समुद्र में गिरती हैं।

संकेत–तदस्तु ---------------------------गृहाण।

अर्थ–कछुआ–तब तो, यदि हिमालय से अथवा धरती से पानी समुद्र में गिरता है, तब आने वाले समय में मैं कहाँ ...?

हाथी–डरो मत। यह जल समुद्र से सूर्य की गर्मी के द्वारा आकाश की ओर जाता है। वहाँ वह बादल बनता है। आकाश से बादल बरसते हैं। पानी पुनः आकाश से आता है। आकाश से जब वर्षा होती है। तालाब नदिया और दूसरे जल के साधन पानी से भर जाते हैं।

संकेत– गजः ----------------------------आप्नोति।

अर्थ–हाथी तालाब से जल पीता है। तालाब से जल पीकर जल से स्नान करता है। कछुआ प्रसन्न होता है। तालाब से बाहर आकर कछुआ हाथी के लिए उपहार व रूप जल के नीचे से मोती देता है। वह हाथी से शिक्षा प्राप्त करता है।

अभ्यास

2. (क) भिक्षार्थं (ख) बालकाय; पोलिकां
   (ग) बालकः (घ) महिला बालकाय
   (ङ) विषाक्तां पोलिकां खादित्वा प्राणान्
3. (क) निर्धनाय निर्धनेभ्य
   देवाभ्याम्
   (ख) क्षुधाभ्याम्
   रोटिकायै रोटिकाभ्यः
   (ग) पूजनाय पूजनेभ्यः
   फलाभ्याम्
4. (क) कृष्णाय (ख) इन्द्राय
   (ग) गोविन्दाय (घ) रामाय
   (ङ) कुबेराय।
5. (क) पादेभ्यः (ख) पुण्याय
   (ग) गोविन्दाय (घ) रामाय
   (ङ) कुबेराय
6. (क) वितरति (ख) ददाति
   (ग) गच्छति (घ) भवति
   (ङ) फलन्ति

तेरहवाँ पाठ :

हिमालय पुत्री

सकेंत–शैलेनद्रो ---------------------------------- **भुवि।**

अर्थ–शैलेनद्र नाम से हिमवान धातु नाम कर नाम से हिमालय है। जिसकी दो रूपवति कन्यायें पृथ्वी पर उत्पन्न हैं।

संकेत– या ----------------------------------**प्रिया।**

अर्थ–(ऋषि कहते हैं) हे राम जो हिमालय की पुत्री है। उन दोनों की माता मैना विदुषी थी और हिमालय की प्रिय पत्नी थी।

संकेत–तस्या ------------------------------------ राघव।

अर्थ–हे राम उस हिमालय की बड़ी पुत्री का नाम गंगा है और दूसरी का नाम उमा है।

संकेत–अथ ---------------------------------- नदीम्।

अर्थ–देवताओं की सिद्धि के लिए बड़ी पुत्री हिमालय से वरदान प्राप्त करके गंगा त्रिपंथगा नाम से नदी हुई।

संकेत–ददौ ------------------------------------हितकाभ्यया।

अर्थ–वह हिमराज की पुत्री धर्म के द्वारा संसार को पवित्र करती हुई स्वच्छन्द होकर त्रिपथगां गंगा तीनों लोकों के ति की कामना के लिए बनी।

संकेत–उग्रेण ---------------------------- लोक नरस्कृताम।

अर्थ–कठिन तपस्या करने वाली हिमालय की पुत्री ने शंकर को पति रूप में प्राप्त करके उमा ने संसार में आदरणीया हुई।

संकेत–सैषा -------------------------------- जल वाहिनी।

अर्थ–ऐसी वह सुरनदी और वह हिमालय की पुत्री उमा देव लोक में जाने वाली जलवाहिनी और पापों को दूर करने वाली हुई।

अभ्यास

2.	(क)	तस्य	(ख)	उमा
	(ग)	गंगा	(घ)	धर्मेण
	(ङ)	विपापा		
3.	(क)	धातूनामाकरो कन्या; भुवि।	(ख)	ज्येष्ठा वरयामासुः ; त्रिपाथां
	(ग)	तपसायुक्तां ; सुताम्	(घ)	उमां
4.	(क)	छयं	(ख)	हिमालयस्य।
	(ग)	गंगा	(घ)	गंगा
	(ङ)	मेना		
5.	(क)	त्रिपथगा	गंगा	
	(ख)	सुता	पुत्री	
	(ग)	शैलेन्द्रः		नगेन्द्रः
	(घ)	मेना		हिमभार्या
	(ङ)	पार्वती		उमा